MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

विदर्भ वार्ता®

International Multilingual Refereed Research Journal

Issue-28, Vol-03 Oct. to Dec.2018

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Scanned with CamScanner

27) डॉ.बी.आर. अम्बेडकर हिन्दू धर्म से बौद्ध धर्म की ओर
श्रीमती इन्दु आर्य, झुन्झुनू (राज.) ||109

28) डॉ.बी.आर. अम्बेडकर और स्त्री विमर्श
डॉ.राजेश आर्य, झुन्झुनू (राज.) ||113

29) शहरी व ग्रामीण उत्कृष्ट विद्यालयों के विद्यार्थियो में पाये जाने पाये जाने सामाजि...
डॉ. जयबाला गुप्ता & डॉ. महेन्द्र कुमार तिवारी, जिला बडवानी (म०प्र०) ||117

30) सप्लाई चैन मैनेजमेन्ट (स्कोप प्रबंधन) का अवलोकन(रिलायंस जियो इन्फोकॉम क...
सम्मर सिंह कुशवाह & डॉ. अनिल शिवानी, भोपाल (म.प्र.) ||120

31) नाट्यकला की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि; भावाभिव्यक्ति और संगीत के परिपेक्ष्य में
डा० आकांक्षा रस्तोगी, बरेली ||124

32) श्रीमद्भगवद्गीता में रसायन विज्ञान
डॉ. सन्जू ||128

33) रघुवंश में अधौ रस की योजना
डॉ. संजय कुमार, पटना विश्वविद्यालय ||130

34) २१ वीं सदी की संस्मरण विधा और संस्मरणकार
प्रा.विजय लोहार, जलगांव ||134

35) सर्वेक्षित ग्राम खुड्डाघाठा का जनांकिकीय अध्ययन
डॉ. के. आर. मतावले, जिला — बिलासपुर (छ.ग.) ||139

36) केदारनाथ अग्रवाल का अनूदित साहित्य
संतोष नागरे, जि. बीड ||150

37) स्वामी विवेकानन्द के शैक्षणिक चिन्तन की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सार्थकता एवं ...
प्रवीण कुमार & सुनेहा सारस्वत, गौतमबुद्धनगर;उ०प्र० ||152

38) राजस्थानी वेशभूषा पर मुगल प्रभाव: बीकानेर एवं जोधपुर राज्य के विशेष संदर्भ में...
डॉ. प्रकाश सारण, बीकानेर ||159

39) किशोरियों में पोषण सम्बन्धी जागरूकता का अध्ययन
डॉ० शुभा शर्मा & डॉ० नयनी सिंह, मेरठ, यू.पी. ||163

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with CamScanner

इस संस्कृति में सामान्यतः सामाजिक विरासत से प्राप्त विश्वास, विचार, व्यवहार, प्रथा, रीति—रिवाज, मनोवृत्ति, ज्ञान, साहित्य, भाषा, संगीत धर्म, नैतिकता इत्यादि को सम्मिलित किया जाता है । ये पीढ़ी—दर—पीढ़ी आगे चलती रहती है तथा प्रत्येक पीढ़ी में इसका अर्जन व परिमार्जन संभव होता है । सर्वेक्षित ग्राम खुड़भाठा में अनेक धर्मावलम्बियों, प्रथाओं एवं रीति—रिवाज के लोग निवासरत है । यहां सतनाम पंथ, इसाई एवं हिन्दू धर्म के अनुयायी है । इन लोगों की प्रथाएं एवं रीति—रिवाज अलग—अलग है । यहां सतनाम पंथ के अनुयायियों के लिये जयस्तंभ एंव हिन्दू धर्म के अनुयायियों के लिये अनेक देवी—देवताओं का पूजा स्थल स्थापित है । जहां पर लोग अपनी—अपनी प्रथाओं एवं रीति रिवाजों के अनुसार पूजा अर्चना शांतिपूर्ण ढंग से करते है तथा ग्राम के सभी लोग मिल—जुलकर एक—दूसरे के त्यौहारों को मनाते हैं । जैसे १८ दिसम्बर गुरूघासीदास जयंती, दशहरा, दीपावली एवं होली आदि ।

संदर्भ :—

१. Davis Kingsley – Population of India and Pakistan Prinection University Press, 1951, P- 150-

२. अनुसूचित जाति अध्यादेश १९३५, १९३६ एवं १९५०.

३. भारतीय संविधान के अनुच्छेद ३६६ (२५)

४. वंदे — संस्कृति एवं व्यवसाय २४ जून २०१७

❑❑❑

36

केदारनाथ अग्रवाल का अनूदित साहित्य

संतोष नागरे
सहा.प्रा.- हिन्दी विभाग,
र.भ.अट्टल महाविद्यालय गेवराई, जि.बीड

****

वैश्वीकरण के इस दौर में अनुवाद का महत्व बढ़ रहा है। अनुवादक अनुवाद के माध्यम से दो भाषा, दो प्रदेश, दो राष्ट्र के बीच सेतु बनकर विश्व को जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य करता है। अनुवादक मूल रचनाकार की पीड़ा को आत्मसात करते हुए उसे अपनी भाषा में अभिव्यक्त करता है। एक तरह से अनुवादक अनुवाद के माध्यम से मूल कृति का पुनःसृजन करता है। इसीलिए मूल रचनाकार की तरह अनुवादक को भी वही श्रेय मिलना चाहिए। केदारनाथ अग्रवाल इस संदर्भ में कहते हैं,- "अनूदित होकर प्रत्येक कविता स्वभावतया नई कृति बन ही जाती है।... इसलिए साहित्य में अनुवादकों को भी वही श्रेय और सम्मान प्राप्त होना चाहिए जो मौलिक कृतिकारों को प्राप्त होता है। तभी प्रान्त-प्रान्त की भाषाओं का रचनात्मक साहित्य हिन्दी में उपलब्ध हो सकेगा और इससे देश की आत्मीय एकता और अखंडता स्थापित हो सकेगी। विश्व साहित्य के ग्रंथो का भी इसीलिए हिंदी में अनुवाद होना चाहिए ताकि देश का जन-मानस विश्व के जन-मानस से जुड़कर दुनिया को एक सूत्र में बंधा-संधा देख सके।"[1]

केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिशील साहित्यधारा के शीर्षस्थ रचनाकार हैं। केदार ने हिंदी साहित्य में कवि, गद्यकार के साथ ही अनुवादक के रुप में भी अपनी पहचान बनायी। केदार ने छात्र जीवन से ही अनुवाद की शुरुआत की। अशोक त्रिपाठी इस संदर्भ में कहते है,- "उमर खय्याम की रुबाईयों का फिट जेराल्ड ने 'गोल्डन ट्रेजरी' नाम से अनुवाद किया था। उसके कुछ छंदों का अनुवाद केदार जी ने किया जो कालेज मैगजीन में छपा और प्रशंसित भी हुआ।"[2] तत्पश्चात केदार ने विश्वविख्यात कवियों की काव्य-रचनाओं का अनुवाद किया। यह अनुवादित काव्य रचना 'देश-देश की कविताएँ' शीर्षक से १९७० में परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद से प्रकाशित हुई। प्रस्तुत रचना में पाब्लो नेरुदा, नाजिम हिकमत, मायकोवस्की, वाल्ट व्हिटमैन, अलेक्सेई सूरकोव, एजरा पाउंड, याकुब कोलास, मूसा जलील, फिट्जेराल्ड,

निकोला वाप्त्सरोव, पुश्किन, प्लेतान कोरान्को, जान कानफोर्ड, एँड्र्याई मैलीश्को आदि कवियों की काव्य रचनाओं का केदार ने हिंदी में सफलतापुर्वक अनुवाद किया है। राजेंद्र कुमार इस संदर्भ में कहते है,- " 'देश-देश की कविताएँ' संग्रह में विभिन्न भाषाओं के कवियों को हिंदी की पृथ्वी पर एक जगह पाकर लगता है कि हम कविता के ऐसे खुले आवास में है, जहाँ न किसी भाषा की सीमा का व्यवधान है, न भूगोल की सीमा का।"[3]

लैटिन अमेरिका के जनकवि पाब्लो नेरुदा केदार के प्रिय कवि हैं। पाब्लो नेरुदा के कविता-संग्रह 'धरती पर घर' के आधार पर प्रस्तुत रचना का शीर्षक 'देश-देश की कविताएँ' रखा गया है। पाब्लो नेरुदा प्रकृति, प्रेम और विश्वमानवता की मुक्ति के गायक है। केदार ने पाब्लो नेरुदा की 'रेल भंजको को जगने दो', 'आज मैं एक पवित्र लड़की के पास लेटा था', 'विलाप के साथ एक गेय प्रशस्ति' कविताओं का अनुवाद किया है। 'रेल भंजको को जगने दो' कविता रेल मजदूरों के आव्हाहन से सम्बन्धित है। जिसमें कवि नेरुदा धरती को युध्द से मुक्त करने के लिए प्रयासरत है-

"शान्ति जगत के सब मिट्टी को,
शान्ति सकल जल, थल, समीर को।"[4]

युध्द के परिणाम स्वरुप हो रहे प्राकृतिक उपादानों के विनाश से कवि नेरुदा चिंतित है। शोषणकारी- सामंतवादी- पूँजीवादी व्यवस्था के प्रतिक्रियास्वरुप साम्यवाद का जन्म हुआ। सर्वप्रथम रुस में साम्यवादी व्यवस्था अस्तित्व में आयी। जिससे सर्वहारा वर्ग को शोषण से मुक्ति मिली। इसलिए दुनिया के शोषितों, पीड़ितों के लिए रुस तीर्थ समान है। साम्यवादी व्यवस्था के पश्चात रुस की बदली हुई स्थितियों से अवगत कराते हुए रुसी कवि नाजिम हिकमत कहते है,-

"वहाँ लाल, पीले, काले, गोरेजन / सब समान है
वहाँ न पीड़ित जनता-जनता के द्वारा
वहाँ न शोषित मानव-मानव के द्वारा
केवल श्रम का मान वहाँ है!
नहीं वहाँ- श्रा और कहीं स्वाधीन मनुज है।
वहाँ झरोखे से सुख-रवि की किरणें आती।
वहाँ मनुज ही जन-जीवन का निर्माता है।"[5]

हाड-तोड मेहनत करनेवाला श्रमजीवी वर्ग अपने श्रम से इस बेरंग दुनिया में रंग भरने का काम करता है। उसके पसीने से ही यह दुनिया सुंदर दिखाई देती है। श्रमजीवी के हाथों में मधुमक्खी- सी निपुणता है। श्रमजीवी वर्ग के प्रति अपनी प्रतिबध्दता को बयान करते हुए नाजिम हिकमत कहते है,-

"मैं कवि हूँ / उन सब लोगों का / जो मिट्टी / लोहे
पावक से जीवन रचते : / मैं सैनिक हूँ कोटि जनों का...।"[6]

वाल्ट व्हिटमैन प्रकृति सौंदर्य अनुपम रचनाकार है। वाल्ट व्हिटमैन ने धूप, आकाश, बिजली, सागर, पेड़, फूल, गेहूँ, हरी घास, बसंत, स्वच्छंद हवा, चिड़िया आदि प्राकृतिक उपादानों का सुंदर चित्रण किया है। वाल्ट व्हिटमैन की प्रकृति सम्बन्धी रचनाओं का प्रभाव केदारनाथ अग्रवाल पर प्रत्यक्ष- परोक्ष रुप से पाया जाता है। "मुझे दुनिया के तमाम कवियों ने प्रभावित किया है। मैंने तमामों से बहुत कुछ सीखा है, लेकिन मैंने किसी का कुछ चुराया नहीं है।"[7] कवि वाल्ट व्हिटमैन को चिड़िया से स्वच्छन्द उड़ान की तो सागर से संघर्ष की प्रेरणा मिलती है-

"लहरों के झूले पर मुझको खूब झुलाना
जिससे मेरी आँखों में निंदिया बौराये,
और मुझे फिर कामुक जल से वहीं पटकना,
मैं उपकार चुका सकता हूँ तेरा!"[8]

केदारनाथ अग्रवाल ने 'कटैया का गीत' शीर्षक से एक चीनी कविता का अनुवाद किया है। जिसमें किसान जीवन का यथार्थ है। देश की उन्नति, विकास कृषि पर निर्भर है। दुर्भाग्य से वैश्वीकरण के इस दौर में किसानों की दुर्दशा हो रही है। किसान के मंगल में ही विश्व का मंगल है। खेतों में अपार अन्न उपजने से यह धरती सुख, समृध्दि, सौभाग्य तथा संपन्नता से जगमगाएगी-

"खेतों में उपजे अन्न अपार / कटाई का आये त्यौहार
मगन मन नाचे नव संसार / गीत का उमड़े पारावार
सुहागिन नारी हो।"[9]

निकोला वाप्त्सरोव तथा पुश्किन की कविताएँ आस्था और जिजीविषा का संदेश देती है। आम-आदमी लोहा बनकर संघर्ष की आँच में तपकर, गलकर, ढलकर अपने जीवन को निखारता है। निकोला वाप्त्सरोव कहते है,-

"मैं जीवन से पूरे बल से / लोहा लेते- लड़ते-लड़ते।
जीवन मुझसे, मैं जीवन से / आपस में झगड़ा करते हैं,
किन्तु नहीं निष्कर्ष निकालो / मैं जीवन से नफरत करता।
नहीं, नहीं, मैं इस जीवन को, / जिसके पंजे फौलादी हैं-
तीक्ष्ण, कुटिल हैं, आघाती हैं,/ - चाहे मेरा सर्वनाश हो-
प्यार सहित अब भी पालूँगा।"[10]

पुश्किन जनता के दुःख-दर्द के कवि है। पुश्किन की कविताओं में सामाजिक प्रतिबध्दता झलक पड़ती है। पुश्किन ने अंधकार में भटकती जनता को अपनी कविता की रोशनी से रास्ता दिखाया। इसलिए जनता हमेशा उन्हें सश्रध्द याद करती रहेगी। इस विश्वास के साथ पुश्किन कहते है,-

Scanned with CamScanner

"दीर्घ कवल तक जनता मुझको प्यार करेगी
मैंने उसके मृदु भावों का सरगम गाया,
भय के युग में आजादी का जोश बढ़ाया
मैंने खंडित आत्मा से आशा अपनाया।"[११]

रूसी कवि अलेक्सी सूरकोव ने अपनी कविताओं में भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति पर प्रकाश डाला है। भारत सदियों से विश्व को शांति तथा भाईचारे का संदेश देता आ रहा है। भारत और रूस की अभिन्न मित्रता का मूलाधार विश्वशांति है। अलेक्सी सूरकोव कहते हैं,-

"उस महादेश के बनो मित्र, रूस और भारत अभिन्न
फिर समय, शत्रु या विधि- विधान कर न सके मैत्री कभी छिन्न
रूसी भाषा में कहो "मीर" मेरे मित्रों फिर बार-बार
हिंदी में उत्तर सुनो "शांति" कल-कल कंठों से बार-बार।"[१२]

सारांश :

केदारनाथ अग्रवाल ने अपनी अनूदित रचना 'देश-देश की कविताएँ' के माध्यम से वैश्विक काव्य- संपदा से भारतीय जन-मानस को परिचित कराने का महत्वपूर्ण कार्य किया। अपने देश की मिट्टी के साथ अभिन्न रुप से जुड़े इन कवियों की रचनाओं में लोकमंगल की भावना चरमोत्कर्ष रुप में पायी जाती है। अतः 'देश-देश की कविताएँ' पढ़ते समय हमें कहीं पर भी ऐसा नहीं लगता कि हम अनूदित रचना पढ़ रहे है, यही उसकी सफलता का प्रमाण है।

संदर्भ ग्रंथ :-

१. केदारनाथ अग्रवाल, विचार-बोध, पृ.१६३-१६५
२. सम्पा. अजय तिवारी, केदारनाथ अग्रवाल पृ.२३०
३. सम्पा.संतोष भदौरिया, केदारनाथ अग्रवाल : गद्य की पगडंडियाँ, पृ.१४२
४. केदारनाथ अग्रवाल, देश-देश की कविताएँ, पृ.३९
५. केदारनाथ अग्रवाल, देश-देश की कविताएँ, पृ.५१
६. केदारनाथ अग्रवाल, देश-देश की कविताएँ, पृ.४९
७. केदारनाथ अग्रवाल, विचार-बोध, पृ.१३-१४
८. केदारनाथ अग्रवाल, देश-देश की कविताएँ, पृ.९२
९. केदारनाथ अग्रवाल, देश-देश की कविताएँ, पृ.१२०
१०. केदारनाथ अग्रवाल, देश-देश की कविताएँ, पृ.११४
११. केदारनाथ अग्रवाल, देश-देश की कविताएँ, पृ.११६
१२. केदारनाथ अग्रवाल, देश-देश की कविताएँ, पृ.९६

37

स्वामी विवेकानन्द के शैक्षणिक चिन्तन की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सार्थकता एवं प्रासंगिकता

प्रवीण कुमार
असि०प्रो०, शिक्षा विभाग,
एम०आई०एम०टी०, गौतमबुद्धनगर, उ०प्र०

सुनेहा सारस्वत
असि०प्रो०, शिक्षा विभाग,
एम०आई०एम०टी०, गौतमबुद्धनगर, उ०प्र०

****

उठो जागो और प्रतिज्ञा मत करो जब तक कि तुम अपने गंतव्य को प्राप्त न कर लो। —स्वामी विवेकानन्द

स्वामी विवेकानन्द का मूल मंत्र था — सहायता न कि विरोध.. दूसरे के भावों को आत्मसात करना न कि विनाश..समन्वय और शान्ति न कि कलह।

देश की राजनीतिक चेतना के साथ—साथ सांस्कृतिक तथा धार्मिक भावनाओं के विकास में अपना बलिष्ठ कन्धा लगाने वालों में महर्षि विवेकानन्द का नाम विशेष तौर पर लिया जाता है। स्वामी विवेकानन्द ने समाज के विकास के लिए विभिन्न उद्देश्यों को निर्धारित कर उन्हें प्राप्त किया। उन्होंने लोकमंगल के लिए रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। स्वामी विवेकानन्द एक सच्चे वेदान्ती माने जाते है। उन्होंने वेदान्त—दर्शन की संक्षिप्त विशेषता एकं सद्विप्रा बहुधावदन्ति 'उत्तिष्ठत, जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधते, ब्रह्म सत्य जगन्मिथया' आदि। स्वामी अद्वैतवाद के समर्थक थे स्वामी विवेकानन्द ने व्यष्टि और समष्टि का समन्वय किया तथा सर्वांग दृष्टिकोण लोगों के समक्ष प्रस्तुत किया। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था—

Scanned with CamScanner